

चौपतना स.क्रि. (देश.) तह लगाना, परत लगाना (कपड़े आदि की)।

चौपहरा वि. (तद्.) 1. चार पहर का 2. चार-चार पहर के अंतर का।

चौपहिया वि. (देश.) चार पहियों का, जिसमें चार पहिए हों। स्त्री. चार पहियों की गाड़ी।

चौपाई स्त्री. (तद्.) 1. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। इसके बनाने में द्विकल और त्रिकल का ही प्रयोग होता है, इसमें किसी त्रिकल के बाद दो गुरु और सबसे अंत में जगण या तगण नहीं पड़ना चाहिए 2. चारपाई, खाट।

चौपाड़ पुं. (देश.) दे. चौपाल।

चौपाया पुं. (तद्.) चार पैरों वाला पशु (गाय, बैल, भैंस आदि) वि. जिसमें चार पाए लगे हों।

चौपाल पुं. (देश.) 1. खुली हुई बैठक, लोगों के बैठने का स्थान जिसमें ऊपर से छाया हो पर चारों ओर से खुला हो 2. बैठक 3. दालान, बरामदा 4. घर के सामने का छायादार चबूतरा 5. खुली पालकी जिसमें परदे या किवाड़ नहीं होते, चौपहला।

चौफला वि. (देश.) जिसमें चार फल या धारदार लोहे के फलक हों।

चौफेरी स्त्री. (देश.) चारों ओर घूमना, परिक्रमा।

चौबंदी स्त्री. (तद्.+फा.) 1. छोटा चुस्त अंगा या कुरता, बगलबंदी 2. राजस्व, कर 3. घोड़े के चारों सुमों की नालबंदी।

चौबच्चा पुं. (तद्.+फा.) 1. कुंड, हौज, छोटा गड्ढा जिसमें पानी रहता है 2. वह गड्ढा जिसमें धन गड़ा हो प्रयो. राजा के किले में कई चौबच्चे भरे पड़े हैं।

चौबरसी स्त्री. (तद्.) 1. वह उत्सव या क्रिया जो किसी घटना के चौथे बरस हो 2. वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने के चौथे बरस हो।

चौबा पुं. (देश.) 1. ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा 2. मथुरा का पंडा दे. चौबे।

चौबाइन स्त्री. (देश.) चौबे की स्त्री।

चौबाई स्त्री. (देश.) 1. चारों ओर से बहने वाली हवा 2. अफवाह किंवदंती, उड़ती खबर 3. धूमधाम की चर्चा।

चौबारा पुं. (देश.) 1. कोठे के ऊपर की वह कोठरी जिसके चारों ओर दरवाजे हों 2. खुली हुई बैठक क्रि.वि. चौथी दफा, चौथी बार।

चौबाहा वि. (देश.) बोन से पूर्व चार बार जोता जाने वाला (खेत)।

चौबीस पुं. (तद्.) बीस से चार अधिक की संख्या।

चौबे पुं. (देश.) ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। टि. मथुरा के पंडे चौबे कहलाते हैं।

चौबोला पुं. (देश.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 8 और 7 के विश्राम से 15 मात्राएँ होती हैं, अंत में लघु गुरु होता है।

चौमंजिला वि. (तद्.+फा.) चार खंडों वाला (मकान आदि)।

चौमासा पुं. (तद्.) 1. वर्षा काल के चार महीने, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन, चातुर्मास 2. वर्षा ऋतु से संबंधित कविता 3. खरीफ की फसल उगने का समय 4. वह खेत जो वर्षा काल के चार महीनों में जोता गया हो 5. किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने में किया जाने वाला उत्सव। वि. चार मास में होने वाला।

चौमुख क्रि.वि. (तद्.) चारों ओर, चारों तरफ।

चौमुखा वि. (तद्.) 1. चार मुँह वाला, जिसके मुँह चारों ओर हों।

चौमेखा वि. (तद्.+फा.) चार मेखों वाला, जिसमें चार कीलें हों। पुं. एक प्रकार का कठोर दंड जिसमें अपराधी को जमीन पर चित्त या पट लिटाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों में मेखें ठोक देते थे।

चौरंगी स्त्री. (देश.) 1. चौराहा, पश्चिम बंगाल में कोलकाता का एक प्रमुख स्थान।

चौर पुं. (तद्.) 1. दूसरों की वस्तु चुराने वाला, चोर 2. एक गंध द्रव्य 3. चोर पंचाशिका के रचयिता संस्कृत के एक कवि का नाम।

चौरस वि. (तद्.) 1. जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर 2. चौपहल, वर्गात्मक।